नमक

एक रूसी लोक कथा

रूस के एक छोटे से गाँव से तीन भाइयों को उनके पिता ने धन-संपत्ति की खोज में घर से बाहर भेज दिया. भेड़िये और लोमड़ी और सेबल की खालों से भरे एक विशाल जहाज़ में फियोदोर उत्तर दिशा की ओर गया. चमकती बर्फ से भरा एक सुंदर जहाज़ लेकर वैसली दक्षिण के नगरों की ओर चल दिया. इवान, जिसे उसका पिता मूर्ख समझता था, लकड़ी के चमचों से भरे एक छोटे जहाज़ में गया.

फियोदोर और वैसली के मन में अपार धन पाने की कामना थी. लेकिन इवान, जो अपने ख़्यालों में खोया रहता था, इस तरह के प्रश्न पूछता हुआ यात्रा पर चला, "आसमान कितना ऊँचा है?" और "क्या धरती गोल है या चपटी?"

फियोदोर और वैसली को यात्रा में असफलता और बरबादी ही मिली. लेकिन इवान ने नमक का एक पहाड़ खोज लिया.नमक एक विदेशी राजा को बेच कर उसने बहुत मात्रा में सोना, चाँदी और बहुमूल्य रत्न प्राप्त किये.

जब फियोदोर और वैसली के जहाज़ तूफान में नष्ट हो गए तो इवान उन्हें बचा लेता है और अपनी संपत्ति उनके साथ बाँटने का सुझाव देता है. लेकिन उसके लालची भाई उसके साथ छल करते हैं और उसे समुद्र में गिरा देते हैं और उसका धन हथिया लेते हैं. लेकिन इवान हार नहीं मानता. सुंदर राजकुमारी, जिसे उसके भाइयों ने उससे छीन लिया था, के प्यार से प्रेरित होकर वह बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना करने को तैयार हो जाता है. अंततः वह जान लेता है कि आकाश कितना ऊँचा है और धरती गोल है या चपटी.

इस रूसी लोक कथा को बड़े रोचक ढंग से लिखा गया है. इवान की बहादुरी और उदारता बच्चों को आनंदित करेगी.

नमक

एक रूसी लोक कथा

सागर के बीच में एक द्वीप है-
वह न बहुत दूर है, न बहुत पास-
वहाँ एक पेड़ है जिसके पत्ते सुनहरी हैं.
इस पेड़ के ऊपर एक बिल्ली बैठी है....
सुनहरी डाल के ऊपर.
जब वह ऊपर जाती है तो वह गीत गाती है
और जब नीचे आती है तो कहानी सुनाती है.
अब बिल्ली नीचे आ रही है.
वह एक कहानी सुना रही है.
यही वह कहानी है.

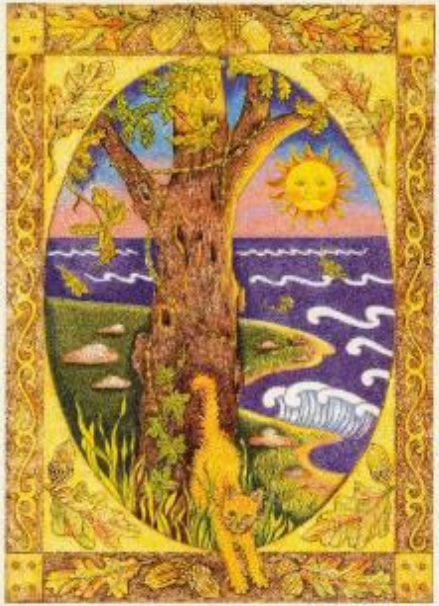

एक समय की बात है. एक व्यापारी के तीन बेटे थे. बड़े दोनों बेटे, फियोदोर और वैसली, चालाक थे. लेकिन सबसे छोटे बेटे को वह बुद्धू इवान बुलाता था, क्योंकि इवान मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछता रहता था यद्यपि कि वह दिखने में सुंदर था.

"क्या धरती गोल है या चपटी?" उसने पिता से पूछा.

"बेशक चपटी है," उसके पिता ने अधीरता से कहा. "हर कोई जानता है."

"आकाश कितना ऊँचा है?" इवान ने पूछा.

"चर्च के शिखर जितना," उसके पिता ने गुस्से से कहा. "अब प्रश्न पूछना बंद करो. तुम मूर्ख लड़के हो."

व्यापारी बहुत धनी था. उसके पास बहुत सारे जहाज़ थे जिन पर मूल्यवान सामान लाद कर वह दुनिया के अलग-अलग देशों में भेजा करता था.

एक दिन उसने अपने सबसे बड़े जहाज़ को भेड़िये और लोमड़ी और सेबल की खालें से भर दिया और अपने आदमियों को आदेश दिया कि दो चमकीली तोपें उस पर लगा दें. फिर उसने सबसे बड़े बेटे को बुलवाया और उससे कहा, "फियोदोर, इन खालों को समुद्र पार, दूर उत्तर के राज्यों में ले जाओ और इन्हें बेच कर सोना, चाँदी और जवाहरात कमा कर लाओ."

फिर उसने अपने सबसे तेज़ जहाज़ को चमकीली बर्फ से भर दिया और दूसरे बेटे से कहा, "वैसली, तुम्हें दक्षिण के देशों की यात्रा करनी होगी, जहाँ मौसम गर्म रहता है और वहाँ यह बर्फ बेच कर सोना, चाँदी और जवाहरात कमा कर लाना होगा. लेकिन तुम्हें यात्रा पर शीघ्र जाना होगा अन्यथा बर्फ पिघल जायेगी." और उसने लड़के को एक तेज़ धार वाली तलवार दी.

सबसे छोटा बेटा, बुद्दू इवान, एक ऊँची मीनार के ऊपर चढ़ गया. वहाँ से बंदरगाह दिखाई दे रही थी. उसने पिता के दोनों खूबसूरत जहाज़ों के पालों को देखा जो हवा में ऐसे काँप रहे थे कि जैसे हवा में उड़ने को बेताब हों. वह उन जहाज़ों को तब तक देखता रहा जब तक कि वह आँख से ओझल नहीं हो गए.

अब मेरी बारी है, उसने सोचा. वह अपने पिता के पास गया और बोला कि उसे भी किसी जहाज़ में व्यापार करने के लिए भेजा जाए.

"नहीं, नहीं," पिता ने कहा. "तुम बहुत बुद्दू हो. इतनी महत्वपूर्ण यात्रा के लिए मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता."

लेकिन इवान ने बहुत निवेदन किया और आखिरकार उसका पिता मान गया. उसने अपना सबसे छोटा जहाज़ उसे दिया. लेकिन उसने जहाज़ को मूल्यवान खालों या हीरों की तरह चमकने वाली बर्फ से नहीं भरा. उसने जहाज़ में लकड़ी के चम्मच भर दिये. उसने इवान को एक चाकू दिया जिसका फल बस एक इंच लंबा था.

लेकिन इवान बहुत प्रसन्न था. वह अपने छोटे जहाज़ पर आ गया और शीघ्र ही कुछ नाविक मस्तूल पर चढ़ गये और पाल खोलने लगे. मस्तूल के शिखर पर उन्होंने एक भड़कीला झंडा लगा दिया.

इवान ने अपना चाकू अपनी पेटी में फंसा कर रख लिया और लकड़ी का एक चम्मच अपनी जेब में रख लिया. अब, उसने अपने आप से कहा, मैं जान पाऊँगा कि आकाश कितना ऊँचा है. मैं यह भी पता लगा लूँगा कि धरती गोल है या चपटी.

समुद्र की लहरों पर धीरे-धीरे हिलता-डुलता उसका छोटा जहाज़ यात्रा पर निकल पड़ा. समय बीता-न बहुत अधिक, न बहुत कम-कि अचानक उत्तर दिशा से शोर मचाता एक तूफान आ गया.

"हमें एक सुरक्षित जगह पनाह लेनी होगी," इवान ने कहा और नाविकों ने जहाज़ को तुरंत एक द्वीप की ओर मोड़ दिया जिस पर एक सफेद पहाड़ सागर से उठता दिखाई दे रहा था.

"आश्चर्य है," नाविक चिल्लाये. "बर्फ का पहाड़!"

लेकिन जब इवान ने बर्फ को अपनी उँगलियाँ से छुआ और उसका स्वाद चखा तो उसने कहा, "यह बर्फ नहीं है, यह नमक है. नमक लकड़ी के चम्मचों से अधिक मूल्यवान होता है. नमक के बिना भोजन में कोई स्वाद नहीं होता."

जैसे ही तूफान थमा उसने अपने नाविकों से कहा कि लकड़ी के चम्मच समुद्र में फेंक दें और सारे पीपे नमक से भर लें.

नाविकों ने झटपट उसके आदेश का पालन किया. शीघ्र ही सारे चम्मच लहरों में बह गये और सारे पीपे नमक से भर गये.

एक बार फिर इवान यात्रा पर निकल पड़ा. वह उस जगह की तलाश में जा रहा था जहाँ वह अपना नया सामान बेच सकता था और धन लेकर पिता के पास लौट सकता था. वह पिता को दिखाना चाहता था कि आखिरकार बुद्धू इवान उतना भी बुद्धू न था.

बहुत जल्दी उसका जहाज़ एक ऐसी बंदरगाह आ पहुँचा जहाँ समृद्ध देश में एक संपन्न ज़ार शासन करता था.

अपनी जेब में नमक की एक थैली लेकर वह जहाज़ से उतरा और नगर की गलियों में टहलने लगा. वहाँ रास्तों पर कई लोग घूम रहे थे और उनके बटुओं में सिक्के खनखना रहे थे. वह लोग अंबर के मोती और जिंजरब्रेड और कुकुरमुत्तों की टोकरियाँ और पवित्र मूर्तियाँ और पिंजरों में बंद पक्षी खरीद रहे थे. लेकिन इवान सीधा ज़ार के महल की ओर गया, अपना नमक बेचने के लिए वह ज़ार की अनुमति लेना चाहता था.

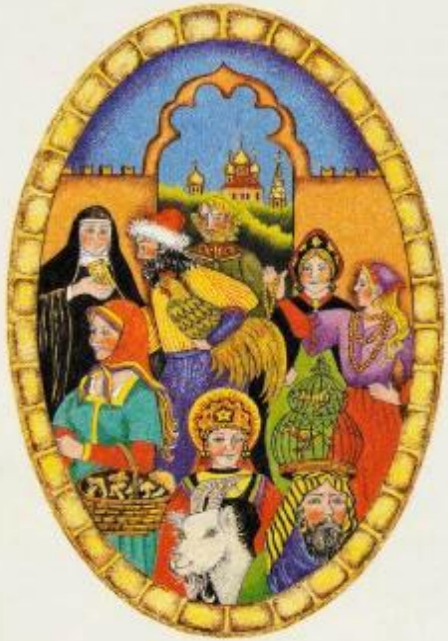

जब वह ज़ार से मिला, उसकी बेटी मारूश्का उसके साथ थी. वह बहुत सुंदर थी और उसके बाल सुनहरे थे. उसकी सुंदरता न लिखी जा सकती थी, न बयान की जा सकती थी.

लेकिन राजकुमारी स्वस्थ न लग रही थी. वह कमज़ोर और उदास थी. ज़ार के एक सेवक से इवान ने पूछा, "राजकुमारी इतनी दुःखी क्यों हैं? क्या वह बीमार हैं?"

"तुम बहुत प्रश्न पूछते हो," सेवक ने कहा. लेकिन फिर उसने इवान को बताया कि राजकुमारी ने भोजन खाना बंद कर दिया था. "ज़ार नये-नये रसोइये काम पर रख लेते हैं, लेकिन राजकुमारी शिकायत करती रहती हैं कि खाना स्वादिष्ट ही नहीं है. अगर वह शीघ्र खाना नहीं खाती तो वह भूख से मर जायेगी."

इवान ने झुक कर ज़ार और राजकुमारी का अभिवादन किया. "महाराज," उसने कहा. "मैं आपके राज्य में अपना सामान बेचना चाहता हूँ."

"वह किस प्रकार की वस्तुयें हैं?" ज़ार ने पूछा. लेकिन उसने इवान की ओर देखा नहीं. वह व्याकुलता से अपनी बेटी को देख रहा था जो बहुत दुर्बल दिखाई दे रही थी. राजकुमारी का सिर झुका हुआ था, लेकिन इवान जब अभिवादन करने के बाद ज़ार के सामने सीधा खड़ा हुआ तो राजकुमारी मारूश्का ने उसे उचटती नज़र से देखा.

"महाराज, नमक है," इवान ने जेब से नमक की थैली निकाली और नमक हथेली पर डाल कर ज़ार को दिखाया.

ज़ार ने नमक के दाने देखे. "नमक? नमक क्या होता है? मुझे तो सिर्फ सफेद रेत दिखाई दे रही है. हमारे देश में रेत बहुत मात्रा में है, छोटे भाई. हमें इसके लिए पैसे नहीं देने पड़ते."

लेकिन ज़ार ने उसे रात का खाना उनके साथ खाने का निमंत्रण दिया, क्योंकि वह दूर देश से आया था.

इवान ने ज़ार का धन्यवाद किया और नमक को अपनी जेब में रख लिया. फिर वह रसोई की ओर चल दिया और रसोइयों को खाना बनाते देखने लगा.

रसोई में बहुत अव्यवस्था थी. रसोइये यहाँ-वहाँ दौड़ रहे थे और इतना स्वादिष्ट भोजन बनाने का प्रयास कर रहे थे कि राजकुमारी उसे खा ले. इवान ने देखा कि उन्होंने एक बतख को भूना और एक कटोरे में शोरबा डाला और सूप में गोभी और प्याज़ के टुकड़े डाले.

लेकिन किसी चीज़ की कमी थी. "तुम नमक कब डालोगे?" उसने मुख्य-रसोइये से पूछा.

"नमक!" रसोइये ने कहा. "नमक क्या होता है?"

"तुम ने नमक के बारे में कभी सुना ही नहीं? क्या तुम नहीं जानते कि नमक के बिना भोजन स्वादिष्ट नहीं बनता?"

रसोइये को एक अजनबी की सलाह अच्छी न लगी. "तुम बहुत प्रश्न पूछते हो," उसने कहा और इवान को धकेल कर वहाँ से हटा दिया.

बाद में जब सारे रसोइये चाँदी के बर्तन साफ कर रहे थे, इवान ने जेब से नमक की थैली निकाली और थोड़ा सा नमक सूप पर छिड़क कर उसे लकड़ी के चम्मच से अच्छे से हिला दिया.

भोजन के समय वह मेज़ के सबसे दूर वाले कोने में बैठ गया. वह राजकुमारी को देखने लगा. जब रसोइये नमक मिला सूप लेकर आए, मारूश्का ने अपना झुका हुआ सिर एक दम ऊपर उठाया और मुस्कराई. "इसकी सुगंध कितनी अच्छी है!" उसने कहा और शीघ्र ही वह बड़ा कटोरा भर कर सूप पीने लगी.

ज़ार बहुत प्रसन्न हुआ. “जो कुछ भी आज तक मैंने चखा है, उन सब से यह सूप अधिक स्वादिष्ट है.” उसने रसोई से मुख्य-रसोइये को बुलवाया और उससे पूछा कि सूप में उसने क्या मिलाया था कि वह इतना स्वादिष्ट था.

“महाराज,” रसोइया हक्का-बक्का हो गया. उसने कहा. “मैंने इसे वैसे ही बनाया है जैसे सदा बनाता हूँ.”

तब उल्लास से भरा इवान खड़ा हुआ. “यह नमक है, महाराज. मैंने थोड़ा सा अपना नमक सूप में मिला दिया था. रसोइये ने सूप अच्छा बनाया है लेकिन नमक के बिना इस में कोई स्वाद नहीं है.”

ज़ार बहुत प्रसन्न हुआ. “मैं तुम्हारा नमक खरीदूँगा. तुम्हारे जहाज़ में जितना भी नमक है उसके लिए कितने पैसे चाहिए?”

“पीपे के बदले में पीपा. तीन पीपे नमक के लिए मैं एक पीपा सोना, एक पीपा चाँदी और एक पीपा जवाहरात लूँगा. और एक अन्य बात.” इवान ने राजकुमारी की ओर देखा जो मुस्करा रही थी और सूप का दूसरा कटोरा पी रही थी. “मैं आपकी बेटी के साथ विवाह करना चाहूँगा.”

ज़ार आश्चर्यचकित हो गया. लेकिन राजकुमारी मारूश्का अपनी कुर्सी से उछल कर खड़ी हो गई और उसने इवान का हाथ थाम लिया. “महाराज,” उसने कहा, “मैं धरती के छोर तक इस आदमी के पीछे जाऊँगी.”

इस तरह सौदा तय हो गया. अगले दिन सगाई की शहनाई बजने लगी और एक शानदार दावत हुई. समारोह के कई व्यंजनों में नमक डाला गया था. सब ने प्रसन्नता से खूब खाया, विशेषकर राजकुमारी ने.

सारा दिन इवान के नाविक नमक से भरे पीपे जहाज़ से उतारते रहे और सोने और चाँदी और जवाहरात से भरे पीपे जहाज़ पर चढ़ाते रहे. उन पीपों को जहाज़ के पेंदे में रखते रहे, जहाँ अँधेरे में वह चमक रहे थे.

अंतिम समय पर जब राजकुमारी पिता को अलविदा कह रही थी, इवान ने मुट्ठीभर नमक उठा कर अपनी जेब में रख लिया. फिर नाविकों ने लंगर ऊपर उठा लिया, पाल खोल दिये, झंडे लहराने लगे और जहाज़ सागर पार घर की ओर चल दिया.

जब लकड़ी के चम्मचों की जगह सोना, चाँदी और जवाहरात लेकर पिता के पास जाऊँगा तो वह कितने प्रसन्न होंगे, इवान ने सोचा.

लेकिन जब वह धरती से दूर निकल आए-न बहुत दूर, न बहुत पास-इवान ने दो जहाज़ों को निकट आते देखा. वह उन जहाज़ों को तुरंत पहचान गया. यह जहाज़ उसके भाइयों-फियोदोर और वैसली-के थे.

लेकिन दुर्भाग्यवश जहाज़ बुरी हालत में थे. उनके पाल फट चुके थे, उनके ढाँचे टूटे हुए थे. वह खतरनाक तरीके से लहरों पर तैर रहे थे.

इवान ने भाइयों से कहा कि अपने डूबते हुए जहाज़ों को छोड़ कर उसके जहाज़ में आ जायें. वह कूद कर तुरंत नावों में बैठ गए और इवान के जहाज़ की ओर आ गए और झटपट उसके जहाज़ पर चढ़ गए. भूख से बदहाल नाविक भी तैर कर उसके जहाज़ पर आ गए.

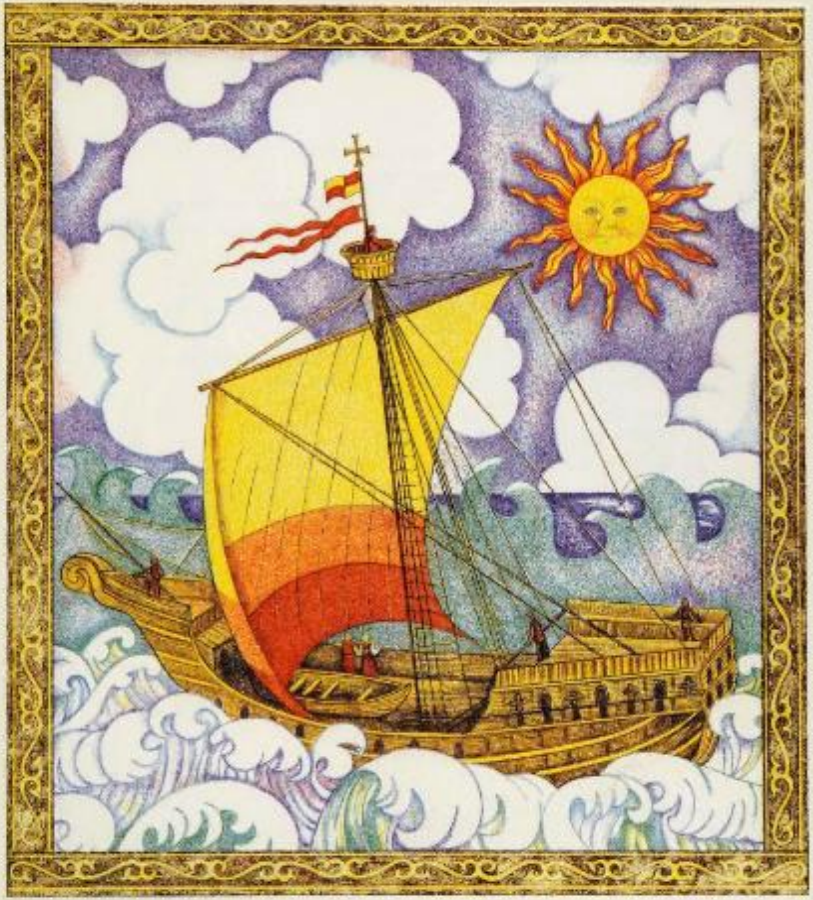

"आपका स्वागत है, मेरे भाइयों," इवान ने प्रसन्नता से कहा. "लेकिन मुझे बताओ आपके सुंदर जहाज़ों की ऐसी दशा कैसे हो गई?"

"एक तूफान आया," फियोदोर ने गुर्राते हुए कहा. "उसने मेरे जहाज़ को लगभग नष्ट ही कर दिया. वह मुझे उत्तर दिशा के बजाय दक्षिण में ले गया. मैं एक गर्म देश में पहुँच गया जहाँ कोई भी मेरी खालें लेने को तैयार न था. मुझे उन्हें घाटे में बेचना पड़ा."

"तूफान ने मेरे जहाज़ को भी रास्ते से भटका दिया," वैसली ने रिरियाते हुए कहा. "मस्तूल टूट गए. इस से पहले कि मैं धरती तक पहुँच पाता, जहाज़ में रखी बर्फ पिघल गई."

फिर फियोदोर ने ललचाई दृष्टि से छोटे जहाज़ की सुंदर सजावट को देखा. "मेरे बुद्धू भाई इवान, मैं देख रहा हूँ कि हमारे पिता का सामान बेचने का तुम्हें भी अवसर मिला."

बड़े गर्व से इवान ने जहाज़ में रखा सोना, चाँदी और जवाहरात अपने भाइयों को दिखाए. बड़ी प्रसन्नता से वह अपनी मंगेतर मारूश्का को भी वहाँ लेकर आया.

फियोदोर और वैसली को उसके सौभाग्य से ईर्षा होने लगी. उन्होंने एक-दूसरे को देखा और आपस में फुसफुसा कर बात करने लगे. अचानक उन्होंने इवान को पकड़ लिया और उसे जहाज़ से नीचे समुद्र में गिरा दिया.

राजकुमारी चिल्लाई और वह इवान के पीछे समुद्र में कूद जाती, लेकिन दोनों भाई उसे धकेल कर उसके केबिन में ले गए और दरवाज़े को ताला लगा दिया.

फिर इवान के धन को लेकर फियोदोर और वैसली आपस में बहस करने लगे. आखिरकार, उन्होंने तय कि फियोदोर सारा सोना और चाँदी रखेगा और वैसली को जवाहरात और राजकुमारी मिलेंगे.

लेकिन राजकुमारी को वैसली के साथ रहना स्वीकार्य नहीं था. “नहीं,” वह चिल्लाई और फिर अपने प्रिय इवान के लिए रोने लगी.

उसका रोना बहुत ही दर्दनाक था. उसके आँसुओं से केबिन का फर्श भीग गया. फिर उसके आँसू केबिन से बाहर बह कर जहाज़ को भरने लगे. शीघ्र ही आँसुओं के बोझ से जहाज़ समुद्र में धीरे-धीरे डूबने लगा.

“मारूश्का, रोना बंद करो,” केबिन के दरवाज़े को खड़खड़ाते हुए वैसली चीखा. “तुम जहाज़ को डुबो दोगी.”

लेकिन उसने रोना बंद नहीं किया. जहाज़ थोड़ा और डूब गया और एक ओर झुक गया.

“अपने जवाहरात समुद्र में फेंक दो,” फियोदोर ने चिल्लाकर वैसली से कहा.

“कभी नहीं,” वैसली ने कहा. “तुम अपना सोना, चाँदी फेंक दो.”

“राजकुमारी मारूश्का को फेंक दो!” फियोदोर चीखा. “उसकी गलती से यह जहाज़ डूब रहा है!”

तब वैसली फियोदोर पर झपटा और दोनों झुके हुए जहाज़ के डेक पर लड़ने लगे. नाविकों ने घबरा कर सोने और चाँदी और जवाहरात के पीपे उठाये और उन्हें जहाज़ से बाहर समुद्र में फेंक दिया. जहाज़ तुरंत सीधा हो गया और आगे चलने लगा.

इस बीच बेचारा बुद्दू इवान कहाँ था?

वह डूबा नहीं था. जब उसके भाइयों ने उसे समुद्र में फेंका था, वह फियोदोर की छोटी नाव में चढ़ गया था और उन दो जहाज़ों में से एक में जाने की कोशिश कर रहा था जो उसके भाइयों के थे. लेकिन जब वह नाव को जहाज़ों की ओर ले जा रहा था, ज़ोर से चरमराने की आवाज़ हुई और दोनों जहाज़ डूब गए.

अब इवान के पास कोई उपाय न था सिवाय इसके कि वह पूरी ताकत लगा कर नाव चलाए और किसी अंजान किनारे पहुँचने की कोशिश करे. सौभाग्य से शाम तक वह एक द्वीप पर पहुँच गया.

अपनी छोटी नाव को किनारे पर ला कर वह द्वीप पर चलने लगा. उसे बहुत प्यास लगी थी. घने जंगल के बीच में उसे एक जल-स्रोत दिखाई दिया. अपने हाथों में पानी भर कर उसने खूब पानी पीया.

लेकिन-बेचारा इवान. एक मुसीबत से बचा तो दूसरी में आ फँसा. उस द्वीप पर एक दैत्य रहता था. इवान को देखते ही दैत्य ने झुक कर उसे अपने विशाल हाथ में पकड़ कर उठा लिया. उसे ऊपर उठा कर वह देखने लगा. इवान का सिर बादलों से टकराया. चलो, उसने सोचा, मैंने इतना तो जान लिया कि आकाश कितना ऊँचा है.

"कितना बढ़िया खाना है," अपने हाथ में इवान को दबाते हुए दैत्य ने गरजती हुई आवाज़ में कहा.

तभी इवान को अपने चाकू का ध्यान आया. उसने झट से अपनी पेटी से चाकू निकाला और दैत्य के अँगूठे पर वार किया. लेकिन वह सिर्फ एक छोटा घाव ही कर पाया. दैत्य को ज़रा भी दर्द न हुआ.

"मैं तो तुम्हें पूरा ही निगल जाऊँगा," अपने मुँह को पूरा खोलते हुए दैत्य चिल्लाया.

"ओह, लेकिन अगर थोड़ा नमक लगा कर खाओगे तो मैं तुम्हें अधिक स्वादिष्ट लगूँगा," इवान चिल्लाया. उसने तुरंत जेब से मुट्ठी भर नमक निकाला और दैत्य के अँगूठे पर उस जगह डाला जहाँ चाकू से घाव किया था.

नमक लगने से ज़ख्म पर जलन होने लगी. दैत्य दर्द से चिल्लाया. वह अपने घुटनों के बल बैठ गया. उसने इवान को ज़मीन पर गिरा दिया. "मेरी मदद करो," वह रोते हुए बोला. "और जो भी तुम चाहोगे मैं वही करूँगा."

"मैं तुम्हारा दर्द अभी ठीक कर देता हूँ," इवान ने कहा. चश्मे का पानी अपने हाथों में भर कर वह लाया और दैत्य के अँगूठे पर डाल दिया.

तुरंत दर्द गायब हो गया. दैत्य ने चीखना बंद कर दिया और गुस्से से इवान को देखने लगा. "तुम्हें क्या चाहिए?" उसने गुर्रा कर पूछा.

"मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे समुद्र के पार मेरे घर ले चलो," इवान ने कहा.

"ओह, बस इतना ही?" दैत्य ने फिर एक बार इवान को उठा लिया. इस बार उसने उसे जेब में रख लिया. उसने अपना एक पाँव समुद्र में रखा और फिर दूसरा और चल पड़ा. पानी में विशाल डग भरते हुए वह आगे बढ़ने लगा.

"इस तरफ नहीं," इवान चिल्लाया. " मेरा घर दूसरी ओर है."

लेकिन दैत्य ने उसकी एक न सुनी. इवान को जेब में उठाये हुए, वह समुद्र के बीच में दुनिया के चारों ओर चलता रहा, उसने महाद्वीप पार किये, पहाड़ और घाटियाँ पार कीं, जब तक कि वह उस जगह नहीं पहुँच गया जिसे इवान अपना घर कहता था.

वहाँ दैत्य ने उसे धरती पर उतार दिया.

"धन्यवाद," इवान ने कहा. दैत्य फिर पानी में उतर गया और पानी को उछालता वापस चल दिया. "अलविदा!"

चलो, आखिरकार मुझे पता लग ही गया कि धरती गोल है, चपटी नहीं, इवान ने सोचा. उत्सुकता से वह पिता के घर की ओर दौड़ा. उसे आशा थी कि उसके दुष्ट भाई राजकुमारी को सकुशल से अपने साथ घर ले आए होंगे.

और मारूश्का वहाँ ही थी! खिड़की से बाहर देखते हुए उसने इवान को देख लिया. उसके दरवाज़ा खोलने से पहले ही मारूश्का बाहर भागी और उसकी बाहों में आ गिरी. वह पहले से अधिक सुंदर लग रही थी. उसने दुल्हन का मुकुट और मोतियों से जड़ी पोशाक पहन रखी थी.

"तुम बिलकुल सही समय पर आए हो," राजकुमारी चिल्लाई. "आज तुम्हारे भाई वैसली से मेरा विवाह होने वाला है. सुनो, विवाह की घंटियाँ बज रही हैं. तुम्हारे पिता विश्वास नहीं करेंगे कि तुम्हारे भाइयों ने तुम्हें जहाज़ से फेंक दिया था और तुम्हारा जहाज़ चुरा लिया था. उन्होंने कहा था कि इवान इतना बुद्धू था कि वह धन-संपत्ति और ज़ार की बेटी नहीं पा सकता था." क्रोध से भरा इवान घर के भीतर गया. वहाँ उसका भाई वैसली दूल्हे की पोशाक पहने खड़ा था. पिता और भाई फियोदोर भी चाँदी के बटन लगे सुंदर कफ्तान पहने हुए थे.

इवान को देखकर वह आश्चर्यचकित हो गए. क्या वह समुद्र में डूब नहीं गया था? “ओह, मेरे अभागे बेटे,” उसे गले लगाते हुए उसका पिता चिल्लाया, “तुम ने लौटने में इतना समय क्यों लगा दिया? तुम्हारे भाई तो कई सप्ताह पहले ही लौट आए थे.”

इवान ने अपने भाइयों की ओर देखा, पर वह लज्जित थे और उससे आँख न मिला पा रहे थे. “शैतान बहुत जल्दी अपना काम करता है,” उसने कहा. “लेकिन ईश्वर धीरे काम करते हैं.” फिर इवान ने राजकुमारी का हाथ पकड़ा और पिता से कहा, “यह मेरी दुल्हन है, वैसली की नहीं.”

“ले जाओ उसे,” वैसली ने कहा. “ऐसी पत्नी किस काम की जो सुबह से रात तक रोती रहे.”

“ले जाओ उसे,” इवान के पिता ने कहा. “जिस तरह वह रोती है, वह बहुत ही शोकजनक होता है.” फिर उसने इवान के फटेहाल कपड़ों की ओर देखा अपना सिर हिलाया. “मेरे बुद्धू बेटे, मैं देख रहा हूँ कि तुम भी असफल हुए हो. अपने तीनों बेटों की यात्राओं का परिणाम दिखाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है. न सोना, न चाँदी, न जवाहरात.”

“लेकिन, पिता, कुछ और है,” इवान ने जेब से बचा हुआ नमक निकाला और उसे ज़मीन पर गिरा दिया. “मैं एक ऐसा द्वीप जानता हूँ जहाँ नमक का पहाड़ है. द्वीप यहाँ से अधिक दूर नहीं है.”

“नमक!” व्यापारी चिल्लाया. “ईश्वर का धन्यवाद! तुम ने तो बहुत ही अच्छा काम किया, मेरे चतुर इवान! अब से हम नमक का व्यापार करेंगे. हम दुनिया के हर कोने में नमक ले जायेंगे, क्योंकि नमक सोने से भी अधिक मूल्यवान है. नमक के बिना भोजन में कोई स्वाद नहीं होता.”

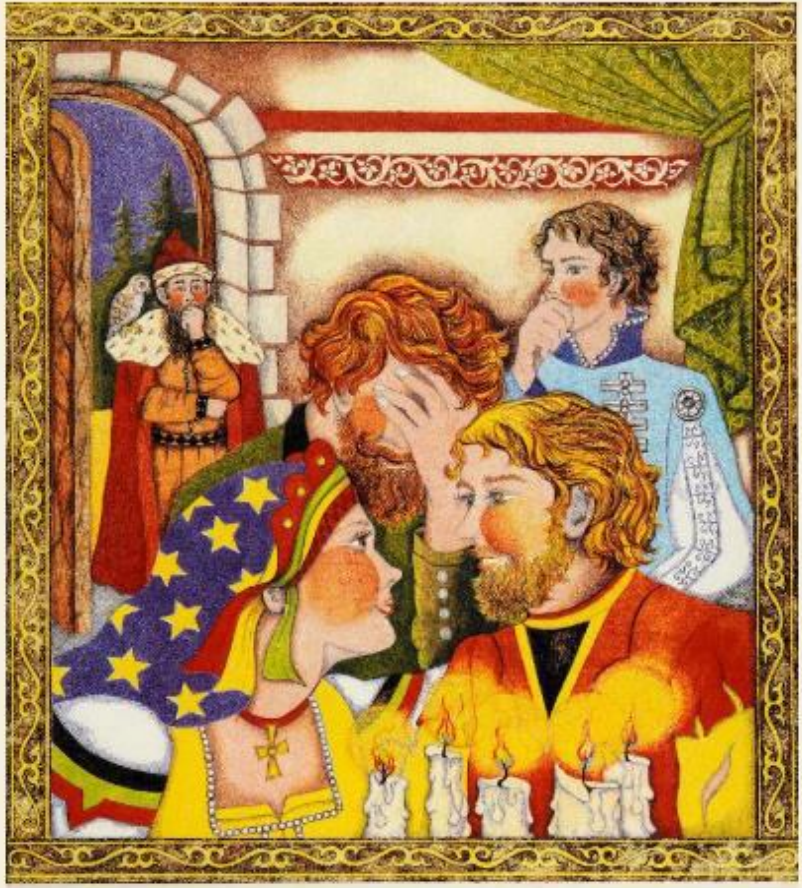

और इवान और राजकुमारी मारूश्का का विवाह हो गया. व्यापारी के जहाज़ नमक ले कर, सागर पार, दुनिया के हर देश में जाते.

क्या तुम्हें मेरी कहानी पर विश्वास है? क्या तुम्हें विश्वास है कि एक ऐसा जहाज़ था जो खज़ाने से भरा हुआ था और जो एक राजकुमारी के नमकीन आँसुओं से लगभग डूब ही गया और एक ऐसा दैत्य था जिसने पैदल ही सारी दुनिया का चक्कर लगाया?

तो सुनो, मैं कम से कम इतना कह सकती हूँ कि आँसू सच में नमकीन होते हैं.

अगली बार जब तुम्हारे आँसू बहें तो ज़बान पर उनका स्वाद चखना. क्या उनका स्वाद नमक जैसा नहीं है?

बिल्ली ने कहानी समाप्त कर दी है.

वह फिर से पेड़ पर चढ़ गई है.

एक डाल पर बैठी है.

वह अपनी पूँछ को हिलाती है और गीत गाती है.

एक गौरव गीत

अंत